एम॰ ए॰ हिन्दी II सेमेस्टर

डॉ॰ अनिल कुमार प्रसाद
महाराजा कॉलेज
आरा

आदिकाल (पृथ्वीराज रासो)

प्रथम पत्र

27.05.20

प्रश्न : पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता पर विचार कीजिए।

उत्तर

'पृथ्वीराज रासो' प्रामाणिक ग्रंथ है या अप्रामाणिक, इस विषय पर बड़ा विवाद है। यह ग्रंथ चंदबरदाई द्वारा रचित है। चंदबरदाई के बारे में कहा जाता है कि 'पृथ्वीराज रासो' इतना प्रमाण ग्रंथ है। यह 69 सर्गों में विभक्त है, इसमें ढाई हजार से ज्यादा पृष्ठ हैं। इस ग्रंथ में कहीं-कहीं बहुत सी ऐसी बातें कही गई हैं जो इतिहास की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण हैं, किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि यह संपूर्ण ग्रंथ ही अप्रामाणिक है। इस ग्रंथ में अन्य कोटि के कवित्त एवं अवान्तर कथाएँ भी मिलते हैं। इसलिए इस ग्रंथ की प्रामाणिकता के संबंध में भिन्न-भिन्न विद्वानों की अलग-अलग राय रही है। इस संबंध में उन विद्वानों को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है—

1. कुछ विद्वान रासो को प्रामाणिक ग्रंथ मानते हैं और उसमें वर्णित घटनाओं को पूर्णतः सत्य मानते हैं। उनके अनुसार रासो पूर्ण विश्वसनीय ग्रंथ है। चंदबरदाई के वंशजों के अनुसार यह स्पष्ट है कि यह पृथ्वीराज का समकालीन कवि था।

2. कुछ विद्वानों के अनुसार रासो बिल्कुल ही अप्रामाणिक ग्रंथ है। उनके अनुसार चंद नामक कोई भी कवि नहीं हुआ और न ही उसकी रचना की रासो में कोई पुष्टि है।

3. कुछ विद्वानों का कथन है कि चंद नाम का समकालीन कवि था और उसने रासो की रचना की थी किंतु वह ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। वर्तमान के रासो में बहुत से प्रक्षिप्त अंश हैं, इसलिए इसे प्रामाणिक नहीं माना जा सकता।

4. कुछ विद्वान यह मानते हैं कि चंद नामक समकालीन कवि ने रासो की रचना नहीं की है, यह किसी और नामक कवि की रचना है।

P.T.O.

इस प्रकार रासो की प्रमाणिकता के संबंध में दो दल बन गए हैं। एक दल रासो को प्रमाणिक मानता है, दूसरा दल अप्रमाणिक।

अब तक रासो की सात प्रतियाँ प्राप्त हो चुकी हैं। इसमें कहना है कि अमुक प्रति प्रमाणिक है और अमुक प्रति अप्रमाणिक। 'पृथ्वीराज विजय' नामक खंडित प्रति इसके विरोध का कारण है। यह प्रति इतिहास से मिलती है। आलोचकों का कथन है कि रासो का वर्णन पृथ्वीराजरासो से नहीं मिलते हैं, अतः यह अप्रमाणिक है।

'पृथ्वीराज विजय' में पृथ्वीराज की माता का नाम कमलावती है जो पृथ्वीराज के वर्णनों से मेल खाते हैं। मुंशी देवी प्रसाद के शब्दों में पृथ्वीराज के उत्कर्ष साधन के लिए रासोकार ने बहुत से राजाओं के नाम दिये हैं जो अप्रमाणिक हैं। उनके मतानुसार यह पृथ्वीराज की मृत्यु के उपरांत किसी चारण द्वारा लिखे गए ग्रंथ हैं।

डा. रामकुमार वर्मा ने भी रासो काव्य में बहुत सी असंगतियां बताती हैं। जैसे, आबू पहाड़ राजा जैत तथा सालख का होना क्योंकि उस समय आबू पर धारावर्ष परमार राज्य करता था और उसका उल्लेख कहीं भी नहीं है। रासो में पृथ्वीराज की शक्ति का वर्णन करते हुए गुजरात के राजा भीमसेन का पृथ्वीराज के हाथों मरना दिखलाया गया है, किंतु शिलालेखों के अनुसार वह 1772 ई. तक जीवित रहे। इस प्रकार कपोल-कल्पित और मनमानी कथाएँ रासो में इतनी अधिक हैं कि वह अविश्वसनीय प्रतीत होता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार इसमें तिथियाँ ही अशुद्ध नहीं अपितु घटनाएँ भी अशुद्ध हैं। रासो में पृथ्वीराज का जन्म सं० 1115 छोड़ जाना 1122 लिखा है, जो इतिहास से मेल नहीं खाता है। भाषा भी इसकी शुद्ध और सुगठित नहीं है। इनके विचार में भाषा की कसौटी पर यदि इस ग्रंथ को कसते हैं तो और भी निराश होना पड़ता है क्योंकि वह बिलकुल बे-ठिकाने है। उसमें व्याकरण

को कोई व्यवस्था नहीं।"

डा० श्यामसुंदर दास के मतानुसार यह ग्रंथ प्रामाणिक है। उन्होंने मुनि जिनविजय जी द्वारा प्राप्त चार छंदों विषयक छंदों को प्रामाणिक माना है। उनके विचार से प्रक्षिप्त अंश तो मिल सकते हैं क्योंकि रामायण जैसे ग्रंथ में, जो इतने वर्षों के बाद लिखा गया, उसमें भी क्षेपक अंश पाए जाते हैं। पुराने शिलालेखों में भी रासो का वर्णन मिलता है। रासो ग्रंथ के मामले में इनका स्पष्ट मत है – "पृथ्वीराज रासो समस्त वीरगाथा काल की सबसे अधिक महत्वपूर्ण रचना है। उस काल की जितनी स्पष्ट झलक पायी जाती है उतनी अन्य ग्रंथों में नहीं।" उन्होंने आगे लिखा क्षेपक वास्तव में भ्रांतियों के कारण है। इस प्रकार के क्षेपक तो अन्य काव्यों में पाया जाता है। नागरी प्रचारिणी में इसकी प्रामाणिकता के विषय में कुछ परवाने प्रकाशित किए थे उनको भी झुठलाया नहीं जा सकता। रहा अरबी-फारसी शब्दों का प्रश्न तो उनके विषय में संदेह नहीं होना चाहिए। मोहम्मद गोरी का भारत पर आक्रमण और महमूद गजनवी का सूत्रपात इसी के आस-पास हुआ था। चंद लाहौर निवासी थे अतः बचपन से ही उनके मस्तिष्क में ऐसे शब्द प्रवेश करते गए। इस कारण चंद की भाषा में अरबी-फारसी का होना कोई अचरज की बात नहीं है।

ऐतिहासिक तिथियों के भ्रांतियों के संबंध में मिश्र बंधुओं का कथन है कि रासो ऐतिहासिक ग्रंथ न होकर काव्य-ग्रंथ है। अतः कवि ने इसमें अपनी कल्पना का महत्वपूर्ण समावेश किया है। चंद का उद्देश्य था – अपने राजा के शौर्य का वर्णन करना और उसके लिए उसने अपनी कल्पना का आधार लिया।

मोहनलाल विष्णु लाल पंड्या का कहना है कि इसकी तिथि की प्रामाणिकता के विषय में राजपूत महाराज के बीच के ९० वर्ष के शासन काल को अक्षत्रिय शासन काल नहीं गिनते अतः रासो में ९० वर्ष घटाकर संवत् लिखा गया।

P.T.O.

रासो समर्थकों का कथन समीचीन प्रतीत होता है कि रासो ग्रंथ की रचना चंदवरदायी ने ही की है जो राजा पृथ्वीराज चौहान के समकालीन थे। यह तो अकाट्य सत्य है कि इसके पक्ष की तुलना में इसके विरोधी मत अधिक पाए जाते हैं किन्तु कहना यह है कि चंद ने जिस ग्रंथ की रचना की वह ग्रंथ समाज में इतना प्रसिद्ध है कि सहसा इस बात को कोई स्वीकार नहीं कर सकता कि यह प्रमाणिक ग्रंथ नहीं है। इतिहास पृथ्वीराज का बंदी होना तथा चंद द्वारा शहाबुद्दीन की मृत्यु आयोजित बताना, ये सब वर्णन चंद ने ही नहीं किए, उनके पुत्र ने उनके द्वारा छोड़े गए अधूरे ग्रंथ को पूरा किया था। जल्हण एक अपने आश्रयदाता का वध एक आततायी के हाथों दिखाना नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने चंद के हाथों उनकी मृत्यु दिखलाने का प्रयास किया। इसमें राष्ट्र के सम्मान की भावना छिपी हुई है।

यह निर्विवाद सत्य है कि रासो एक उच्च कोटि का ग्रंथ है, इसकी प्रमाणिकता संदिग्ध है। इस विषय में आलोचकों को और खोज करने की आवश्यकता है जिससे इस पर अप्रमाणिक होने के संदेह को मिटाया जा सके।